जागरण विशेष

लैगून पद्धति से तैयार सरोवर पानी उपलब्ध कराने संग शोधित भी करेगा

जबलपुर के बघराजी ग्राम पंचायत में 50 वर्ष पुरानी जल संरचना को मिला पुनर्जीवन, मुख्य जलस्रोत में मछली पालन, सिंघाड़ा उत्पादन का विकल्प भी

तरुण मिश्र • नईदुनिया

जबलपुर: मध्य प्रदेश के जबलपुर जिले की ग्राम पंचायत बघराजी में करीब 50 वर्ष पुरानी जल संरचना को पुनर्जीवित किया गया है। गांव की नालियों के मिलने से अनुपयोगी हो चुके जलस्रोत को अमृत सरोवर योजना के अंतर्गत जिला पंचायत ने ऐसी जलसंरचना में परिवर्तित कर दिया है, जो प्रदूषणमुक्त होकर ग्रामीणों तथा पशुओं के लिए उपयोगी होगा। इसमें जनभागीदारी से पुनर्जीवित हुए तालाब को लैगून (कुंड) पद्धति से तैयार किया गया है। इस पद्धति से तैयार सरोवर न केवल पानी उपलब्ध कराएगा बल्कि उसको शोषित भी करेगा। इस पद्धति में तालाब में तीन लैगून क्रमशः मनुष्य, पशुओं और मूर्ति विसर्जन आदि के लिए बनाए गए हैं। लैगून के अतिरिक्त मुख्य जलस्रोत में मछली पालन, सिंघाड़ा उत्पादन का विकल्प भी होगा।

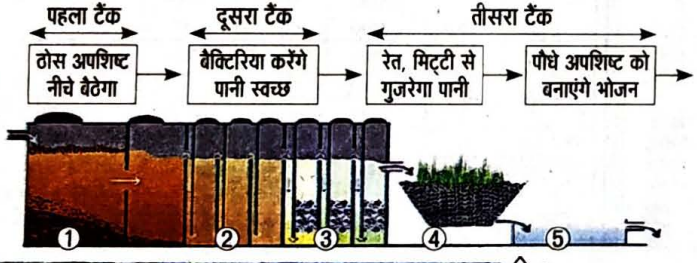

^ डीवाट्स संरचना- नालियों का पानी होगा इन चैंबरों के माध्यम से स्वच्छ • नईदुनिया

<< सफाई के बाद बदली बघराजी तालाब की तस्वीर • नईदुनिया

ऐसे तीन चरणों में पानी होगा साफ

तालाब के निकट बन रहे डीवाट्स स्ट्रक्चर से तीन चरणों में नालियों का पानी साफ होकर तालाब में मिलेगा। बगैर किसी रसायन के उपयोग कर पानी को स्वच्छ करने विकेंद्रीकरण उपचार प्रक्रिया अपनाई जाएगी। पहला, दूसरा और तीसरा टैंक पानी को स्वच्छ करेगा। पहले टैंक में ठोस अपशिष्ट नीचे बैठ जाएगा और पानी दूसरे टैंक में चला जाएगा। यह दोनों चैंबर ऊपर से बंद रहेंगे, जहां बगैर आक्सीजन और सूर्य प्रकाश के पानी साफ होगा। यहां उत्पन्न होने वाले बैक्टिरिया पानी स्वच्छ करेंगे। इसके बाद यह पानी तीसरे टैंक में जाएगा, जहां रेत, मिट्टी, पत्थर से गुजरकर पानी स्वच्छ होगा। इस टैंक के बाहर हाइड्रोफिलिक पौधे से होकर यह पानी तालाब तक पहुंचेगा। कम मिट्टी और ज्यादा पानी में पनपने वाले इन पौधों का प्रमुख भोजन पानी के अपशिष्ट होते हैं। इसका पानी पहले लैगून में जाएगा।

गोंडवाना काल की वीरांगना रानी दुर्गावती ने जल संरक्षण के लिए काफी कार्य किए थे। जबलपुर के आस-पास तालाब इस बात के उदाहरण हैं। आदिवासी बाहुल्य कुंडम क्षेत्र के बघराजी का इतिहास भी गौरवपूर्ण है। यह 70 से अधिक स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का गांव है। अतः यहां के तालाब को सर्वप्रथम पुनर्जीवत करने का कार्य किया गया है। तालाब के पुनर्जीवन के लिए बेंगलुरु के जल संरक्षणवादी और पर्यावरणविद् आनंद मल्लिगावड की तकनीक अपनाई गई है।

जयति सिंह, सीईओ, जिला पंचायत, जबलपुर

तालाब के पुनर्जीवन के कार्य में महज महीनेभर का समय लगा। सबसे पहले इसके प्रदूषित पानी को निकाला गया। इसके बाद नीचे जिमी गाद किसान ले गए, जिससे तालाब की सतह साफ और गहरी हो गई। गांव के उत्सर्जित पानी को स्वच्छ करने को डिवाट्स तकनीक (अपशिष्ट जल उपचार के लिए अपनाई जाने वाली तकनीक) बनाई गई है, जो तीन चरणों में पानी को बिना किसी रसायन के स्वच्छ कर तालाब के पहले लैगून तक पहुंचाएगी। तीनों लैगून का पानी मुख्य तालाब से नहीं मिलेगा, जिससे मुख्य जलस्रोत पूर्णता स्वच्छ रहेगा एवं मछली पालन, सिंघाड़ा उत्पादन आदि के लिए उपयुक्त रहेगा। हरियाली बढ़ाने के लिए तालाब के आस-पास पौधारोपण करने तथा पार्क बनाने की भी योजना है। तालाब के पुनर्जीवन के लिए लोहा, सीमेंट आदि का प्रयोग नहीं किया गया।

किस कुंड का पानी कौन करेगा उपयोग: तालाब में तीन कुंड बनाए गए हैं, जिनका अलग-अलग उपयोग होगा। पहले लैगून में बारिश और नालियों का साफ किया गया पानी भरेगा, जिसका उपयोग पशुओं के लिए होगा। बारिश का पानी दूसरे व तीसरे कुंड में भरा जाएगा। दूसरे कुंड का उपयोग ग्रामीण कपड़े धोने, नहाने आदि के लिए करेंगे और तीसरे कुंड का उपयोग मूर्ति विसर्जन के लिए किया जाएगा।

अतिरिक्त सामग्री पढ़ने के लिए स्कैन करें।

nwda.gov.in